आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2595 • उदयपुर, मंगलवार 01 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कूबड़ मुक्त हुई लवली

रायबरेली (उत्तरप्रदेश) जिले के कस्बे में गार्ड की नौकरी करने वाले मोतीलाल ने अपनी बेटी लवली को पढ़ा–लिखा कर इस योग्य बनाने का संकल्प लिया कि वह परिवार और समाज के लिए मिसाल बन सके। जन्म के बाद उसे बड़े लाड़–प्यार से पाला और 5 वर्ष की उम्र में स्कूल दाखिले के बाद से ही मोतीलाल दिनरात मेहनत करने लगे। पूरा परिवार उन्हीं पर आश्रित था। लवली 8 वर्ष की हुई तो उसकी रीढ़ में यकायक दर्द रहने लगा और एक गांठ सी उभरती दिखाई दी। माता–पिता चिंतित हो गये। स्थानीय अस्पताल में इलाज चला पर गांठ बढ़ते–बढ़ते कुबड़ का रूप लेने लगी, बच्ची को चलने–फिरने और स्कूल बेग उठाने में भी तकलीफ होने लगी। मोतीलाल को अपना सपना बिखरता दिखाई देने लगा। उन्होंने कर्ज लेकर भी लवली को लखनऊ–दिल्ली में दिखाया लेकिन जो खर्च बताया गया, उसका इन्तजाम उनके बूते के बाहर था। लवली 13 वर्ष की हो गई। पीठ पर कुबड़ का बोझ बढ़ गया। परिवार को सामने रोज मरने और जीने जैसी स्थिति थी। इसी बीच एक दिन उन्हें किसी ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी की उम्मीद की एक किरण के रूप में मिली। मोतीलाल बिटिया को लेकर उदयपुर आए और संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी भैया से भेंट की। भैया ने तत्काल शहर के नामी स्पाइन विशेषज्ञ हॉस्पीटल से सम्पर्क किया। जहां से कुबड़ निकालने व बच्ची के सामान्य जीवन जीने का आश्वासन मिला। ऑपरेशन के लिए संस्थान ने 3 लाख का भुगतान किया।

बेटी कुबड़ से मुक्त हो गई और मोतीलाल को उसका सपना साकार करने का अवसर मिल गया। पूरा परिवार लवली की नई जिन्दगी के लिए दानवीरों को बारम्बार दे रहा धन्यवाद।

खुशी की लहर लिए चल पड़ी सरिता

बिहार के गोपालगंज जिले की 40 वर्षीय गृहिणी सरिता का जीवन अपने परिवार के साथ व्यस्थित चल रहा था कि कुदरत ने ऐसी करवट ली कि बिन हाथ–पांव वाली होकर दूसरों के सहारे की मोहताज हो गई। जिसका सफल इलाज संस्थान के वरिष्ठ प्रोस्थेटिक एवं आर्थोटिस्ट डॉ. मानस जी साहू ने दोनों कृत्रिम हाथ–पैर लगाकर किया।

सरिता बताती है कि उसके 11 व 12 साल के पुत्र–पुत्री हैं। वह अपने पति की भजन कीर्तन से प्राप्त मामूली आमदनी में भी खुशी से गुजर बसर कर रही थी। 4 साल पहले वो अपने भाई से मिलने चंडीगढ़ गई और परिवार के खराब हालात से भाई को अवगत कराया तो उसने लुधियाना में एक कारखाने पर मजदूरी दिलवा दी। 3 साल सब कुछ ठीक चला। जनवरी 2020 में वो काम से विश्राम स्थल लौट कर हाथ–पांव धोने गई जहां एक बाल्टी से पानी लेकर हाथ–पैर धोये जिससे हाथ–पैरों में जलन महसूस होने लगी। साथी मजदूरों को बताने पर उसे हॉस्पीटल ले जाया गया। तब तक हाथ–पैर एकदम सुन्न व काले हो चुके थे। डॉक्टर्स के अनुसार जिससे उसने हाथ–पांव धोए उस पानी में तेजाब का अंश था। हाथ–पांव काटने होंगे। यह सुन सरिता स्तब्ध रह गई। कर भी क्या सकते थे? एक ही झटके में चलती–फिरती जिन्दगी दूसरों के सहारे हो गई। वह इतनी दुःखी थी कि रोजाना मौत मांगती थी। तभी पड़ौस के एक व्यक्ति ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया तो उदयपुर चले आए .... अब वह कृत्रिम पैरों से चलती व हाथों से जरूरी लेकिन आसान काम कर लेती है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
SINCE 1985
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 06 फरवरी 2022 प्रातः 11.00 बजे से

अरेरा फार्म मैरिज गार्डन, रेडिसन होटल के सामने,
ईश्वर नगर गेट, गुलमोहर, भोपाल (म.प्र.)

मानव सेवा संघ भवन, पुराना बस स्टेण्ड
करनाल - हरियाणा

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमंत्रित है।

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
SINCE 1985
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 06 फरवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

जगजीवन स्टेडियम स्टेशन रोड, प्रखण्ड कार्यालय के पास मोहनीया जिला - कैमूर - बिहार	पन्नालाल हीरालाल स्कूल, खादी भण्डार के पीछे, बीदर- कर्नाटक
गुरुद्वारा श्री जन्डसर साहिब, बहादुर द्वार बरेटा, तह.- बुडलाडा, जिला - मानसा, पंजाब	माहेश्वरी भवन, बस स्टेण्ड रोड, शेहगांव, बुलढाणा, महाराष्ट्र

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

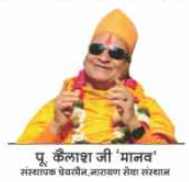

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

जिला खेलकुद में जीते पदक

65वीं उदयपुर जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में संस्थान की नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बालक–बालिकाओं ने भाग लेकर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सिल्वर व कांस्य पदक प्राप्त किए। 16से 18 नवम्बर तक हुई जिम्नास्टिक स्पर्द्धा में विशाल सांगिया ने व जूडो स्पर्द्धा में राकेश परमार ने कांस्य पदक प्राप्त किया, जब कि एथलेटिक्स प्रतियोगिता (1–3 दिसम्बर) में शिवराज अंगारी ने रजत पदक हासिल किया। शिवराज अंगारी ने राज्यस्तरीय एथेलेटिक्स स्पर्द्धा में उदयपुर जिले का प्रतिनिधित्व भी किया। जिम्नास्टिक में सतीश बम्बूरिया, गोविन्द बम्बूरिया, अरूण डूंगरी व अजय बम्बूरिया का भी श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा। एथेलेटिक्स में रूपलाल पारगी, नारायण लाल, गोविन्द बम्बूरिया, विशाल सांगिया, गुंजन जोशी, हिमानी कुंवर, तनु किकावत व जिज्ञासा कुंवर को श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार मिले।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये भावक्रांति की कथा, ऐसे इंसान की कथा कि 1976 में जब में पिण्डवाड़ा में 40 घायलों को देखकर व्यथित हो रहा था, कोई गाड़ी नहीं रोकता बार–बार चिल्लाता था गाड़ी रोकिये इनको 22 किलोमीटर दूर सिरोही ले चलिए। इनको बचा लीजिए इनको हॉस्पीटल भर्ती में करवा दीजिए। अरे 7 लाशें पड़ी है, इनमें से किसी की मृत्यु हो जायेगी। हम अपने आपको माफ कैसे कर पायेंगे। तब उस समय इंसान जी मिले। इंसान जी ने कहा में गाड़ी रोकूंगा।

इंसान जी के पौत्र शांतिलाल का अपहरण हो गया था। फिर भी इंसान जी ने अपना कर्त्तव्य बताया। सांकेत कथा की पुस्तक तो बाजार आप 500 रुपये खर्च करेंगे मिल जायेगी। रामचरित मानस तुलसी के बेटे गोस्वामी महाराज का रामचरित्र मानस जिसमे हजारों चौपाइयां है।

मंत्र महामणि विषम् ब्याल के
मेटत कठिन कुंभ के भाल के।।

वो रामचरित्र मानस जो मिल जायेगा। वाल्मीकि ऋशि जी की रामायण मिल जायेगी। आपको 1 लाख श्लोकों की महाभारत भी मिल जायेगी। आपको श्रीमद् भागवत महापुराण ग्रंथ के रुप में मिल जायेगा। लेकिन इन ग्रंथ की बातों को अपने जीवन में धारण करें। बहुत अच्छा इंसान है कोई भी कारण बिना परिणाम नहीं होता। यदि इस केले के बीज को उगाया नहीं जाता तो केले का गुच्छा नहीं आता। ये फल है मौसमी है, संतरा है इसके बीज को उगाया नहीं जाता तो मौसमी बनती नहीं। भाईयो और बहिनों मैं बार–बार आऊँगा मैं हर बार आऊंगा मैं आपके बच्चों को अपने बच्चों के लिए ये ऐसे भी लेकर आऊंगा गुब्बारे भी लेकर के आऊंगा बच्चों को फूलाकर दे दीजिएगा।

धैर्य की असली परीक्षा

एक बार स्वामी विवेकानंद ट्रेन से सफर कर रहे थे। वे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठे हुए थे। उनके पास ही दो अंग्रेज और आकर बैठ गए। अंग्रेजों ने विवेकानंद को देखा तो सोचा कि एक साधु इस डिब्बे में कैसे बैठ सकता है। अंग्रेज सोच रहे थे कि ये साधु है, ज्यादा पढ़ा–लिखा नहीं होगा। हमारी भाषा भी नहीं जानता होगा। दोनों अंग्रेज अपनी भाषा में साधु–संतों की बुराई करने लगे। वे बोल रहे थे, ये जो लोग साधु बन जाते हैं, दूसरों के पैसों पर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में घूमते हैं, ये लोग धरती पर बोझ हैं। वे लगातार साधुओं की बुराई कर रहे थे, क्योंकि वे ये मान रहे थे कि ये साधु हमारी बात समझ नहीं पा रहा है, इसे इंग्लिश तो आती नहीं होगी। एक स्टेशन पर रेलगाड़ी रुकी तो वहां गार्ड आया तो विवेकानंदजी ने उस गार्ड से अंग्रेजी में कोई बात की। ये देखकर दोनों अंग्रेज हैरान थे, उन्हें लगा कि यह तो फर्राटेदार इंग्लिश बोल रहा है। उन्हें शर्मिंदगी होने लगी।

दोनों अंग्रेजों को ये मालूम हो गया कि ये स्वामी विवेकानंद हैं। दोनों ने स्वामीजी से क्षमा मांगी और पूछा, आप अंग्रेजी भाषा जानते हैं, हम लगातार आपकी बुराई कर रहे थे तो आपने हमें कुछ बोला नहीं। ऐसा क्यों? स्वामीजी ने कहा, आप जैसे लोगों के संपर्क में रहते हुए उनकी भाषा सुनते हुए, उनकी प्रतिक्रिया से मुझे बहुत फायदा होता है, मेरी सहनशक्ति और निखरती है। आपके अपने विचार हैं, आपने प्रकट कर दिए। मेरा अपना निर्णय है कि मुझे धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। मैं आप पर गुस्सा करता तो नुकसान आपका नहीं, मेरा ही होता। जब कोई हमारी बुराई करता है, तब हमारे धैर्य की असली परीक्षा होती है। बुरी बातों को सहन करने की शक्ति हमें कई समस्याओं से बचा लेती है।

सम्पादकीय

भूत, भविष्य और वर्तमान कालों में हर व्यक्ति विचरण करता रहता है। एक विचारवान् व्यक्ति के लिये यह संभव नहीं है कि वह अपने विगत का स्मरण भूल जाये। अतीत की छाया हर समय उसे घेरे रहती ही है। और भविष्य तो इतना आकृष्ट करता है कि अधिकतर व्यक्ति उसे जानने को आतुर रहते हैं। भविष्य को जानने के लिये विश्व में अनेक पद्धतियों का विकास भी इसी सोच का परिणाम है। हम ज्यादातर या तो भूतकाल में चले जाते हैं या भविष्य के चिंतन में उलझ जाते हैं, इस कारण हर बार वर्तमान से चूक जाते हैं। यह ठीक है कि भूतकाल हमें मूल्यांकन करने व सीखने का अवसर देता है। उससे गौरव की अनुभूति भी होती है। और भविष्य हमें कमियों को सुधारने की प्रेरणा देता है। किन्तु वर्तमान तो वास्तविक जीवन है। यह आज है। कहा भी जाता है कि –'आज है जो राज है।' यानी किया जा सकता है वह तो वर्तमान ही है। यही आनंद का स्रोत है, कर्म का संकल्प है तथा फल का भोग है। इसलिये ज्यादा से ज्यादा वर्तमान में जीने की आदत डालेंगे तो हम व्यावहारिक बन सकेंगे।

कुछ काव्यमय

भूत, भविष्य व वर्तमान हैं,
तीन दशायें जीवन की।
इसमें भिन्न भिन्न रहती हैं,
भावदशा मानव मन की।
पर निर्णायक वर्तमान है,
यही वास्तविक जीवन है।
भूत, भविष्य भी मानव का
वैचारिक जीवन धन है।

- वरदीचन्द राव

सच्ची सुंदरता

राजकुमार भद्रबाहु को अपने सौंदर्य पर बहुत गर्व था। वह खुद को दुनिया का सबसे सुंदर आदमी मानता था। एक बार वह अपने मित्र सुकेशी के साथ घूमने जा रहा था। रास्ते में श्मशान आया। जब भद्रबाहु ने वहां आग की लपटें देखीं तो चौंक गया। उसने सुकेशी से पूछा, 'यहां क्या हो रहा है?' सुकेशी ने कहा, 'युवराज मृत व्यक्ति को जलाया जा रहा है।' इस पर भद्रबाहु ने कहा, 'जरूर वह बहुत ही कुरूप रहा होगा। सुकेशी बोला, 'नहीं, वह बहुत ही सुंदर था। इस पर भद्रबाहु ने आश्चर्य से कहा, 'तो फिर उसे जलाया क्यों जा रहा हैं?' सुकेशी ने जवाब दिया,

मृत व्यक्ति की देह को जलना ही होता है। चाहे वह कितना ही सुंदर क्यों न हो। मरने के बाद शरीर नष्ट होने लगता है। इसलिए उसे जलाना जरूरी है। यह सुनकर भद्रबाहु को काफी धक्का लगा। उसका सारा अहंकार चूर–चूर हो गया। उसके बाद से वह हरदम उदास रहने लगा। इससे उसके परिवार के लोग और मित्र चिंतित हो गए। एक दिन भद्रबाहु को एक महात्मा के पास ले जाया गया। सारी स्थिति जानकर महात्मा ने उसे समझाया, कुमार, तुम भारी भूल कर रहे हो। शरीर थोड़े ही सुंदर होता है। सुंदर तो होता है, उसमें रहने वाला हमारा मन, हमारे विचार और कर्म सुंदर होते हैं। तुम शरीर को इतना महत्व न दो। इसे एक उपकरण या माध्यम भर समझो। अपने विचार और कर्म को सुंदर बनाने का प्रयत्न करो। तभी तुम्हारा जीवन सार्थक होगा। भद्रबाहु को बात समझ में आ गई। उस दिन से वह बदल गया। इस कथा प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि शारीरिक सौंदर्य नाशवान है। मन, कर्म और विचारों की सुंदरता ही मनुष्य के व्यक्तित्व और कृतित्व को निखारती है। यही सच्ची सुंदरता भी है।

अपनों से अपनी बात

संस्कारों की परीक्षा

ऋषि धौम्य के आश्रम में आसपास गांवों के बालक विद्याध्ययन के लिए आते थे। वे उन्हें शास्त्र के साथ–साथ संस्कार की शिक्षा देते थे। समय–समय पर वे उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षा व संस्कार के विकास व प्रभाव को जानने के लिए बालकों की परीक्षा भी लेते रहते थे।

उन्होंने शिष्यों से आश्रम की कुटियाओं के छप्पर ठीक करने और गौशाला में पानी न भरने देने की व्यवस्था में लगा दिया। बरसात ने मूसलाधार रूप ले लिया। तभी उन्हें सूचना मिली कि गांव के निकट छोटे तालाब बांध में पड़े सुराख से रिसता पानी खेतों में उतरकर कर फसलों को बरबाद कर रहा है। ऋषि ने अपने शिष्य आरूणि को बुलाया और कहा– 'बेटा जाओ और सुराख को बंद करने का उपाय करो।' आरूणि तत्काल उठा और गुरु के चरण स्पर्श कर टोकरी कुदाल लेकर मौके पर पहुंचा। सुराख छोटा ही था उसने तत्काल वहां मिट्टी डालना शुरू किया तभी सुराख और बड़ा हो गया पर

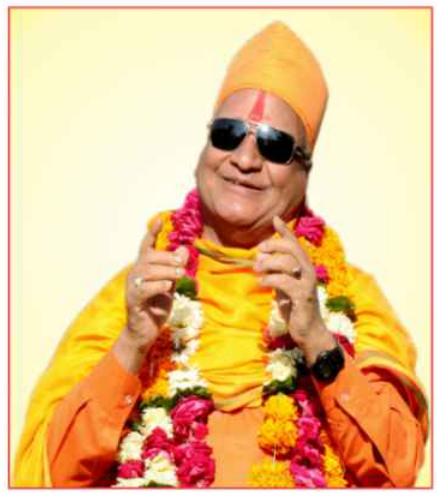

वह रुका नहीं, मिट्टी डालता ही गया, पानी मिट्टी को अपने साथ बहाता हुआ खेतों की और जाने से न रुका तो वह बिना समय गंवाए सुराख में मिट्टी ठूंस कर स्वयं सुराख की ओर पीठ कर लेट गया। बारिश अब कम हो चुकी थी। रात्रि ने पैर पसार लिए।

आरूणि को लौटता न देख ऋषि व आश्रमवासी चिन्तित हो गये। वे उसे ढूंढते हुए बांध पर पहुंचे। देखा तो आरूणि पानी को रोके पड़ा है। गुरु की आंखे शिष्य के इस सेवा समर्पण को देख नम हो उठी। उन्होंने उसे उठाया और बाहों में भर लिया।

इसी तरह उन्होंने अपने दूसरे शिष्य उपमन्यु को जंगल में गायें चराने का काम दिया। लेकिन भोजन का कोई प्रबंध नहीं किया। देखना चाहा कि वह अपनी क्षुधा शान्ति के लिए क्या मार्ग चुनता है। उपमन्यु भिक्षा मांग कर उदर पूर्ति कर लेता और जब भिक्षा नहीं मिलती गायों को दूह कर दूध पी लिया करता। ऋषि ने ऐसा करते उसे देख लिया। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और बोले– उपमन्यु! शिष्य के लिए यह उचित नहीं है कि वह गुरु से आज्ञा लिए बिना कोई कार्य अथवा आश्रम के नियमों को भंग करें। उपमन्यु ने भूल स्वीकार करते हुए कहा– गुरुदेव भविष्य में भूखा रहने की तो बात ही क्या, प्राण जाने का अवसर भी आया तो आश्रम की व्यवस्थाओं की अवज्ञा नहीं करूंगा। उसने कई दिन निराहार रहकर और काफी दुर्बल हो जाने तक अपनी इस निष्ठा की परीक्षा भी दी और खरा उतरा।

– कैलाश 'मानव'

सेवा संकल्पों का विस्तार

नारायण सेवा संस्थान आपश्री जैसे करुण हृदय दानवीर–भामाशाहों के सहयोग से दिव्यांग जन की चिकित्सा, पुनर्वास एवं उनके स्वावलम्बन की दिशा में पिछले 36 वर्षों से समर्पित है। संस्थान के निष्णात चिकित्सकों द्वारा 1997 से अब तक पोलियो, सेरेब्रल पाल्सी, लिम्फेटिक फ्लोरोसिस जैसे जटिलतम रोगों के 4 लाख 26 हजार 850 निःशुल्क ऑपरेशन तो किए ही गए हैं, इसके साथ ही दिव्यांगों के कौशल विकास व उन्हें रोजगार से जोड़ने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण भी संचालित हो रहे हैं।

दिव्यांग एवं समाज के निर्धन

वर्ग के परिवारों में विवाह योग्य युवक–युवतियों की तलाश कर 36 निःशुल्क सामूहिक विवाहों में 2000 से अधिक की गृहस्थी बसाई गई है। 37वां विवाह 6 मार्च को प्रस्तावित है। जिसमें पधारने की प्रार्थना है। अक्षम व अनाथ बच्चों के लिए 1990 से भगवान महावीर बालगृह के संचालन के साथ संस्थान 200 गरीब व जनजातीय क्षेत्रों के बालकों के लिए अत्याधुनिक एवं डिजिटल शिक्षा का बहुआयामी स्कूल 'नारायण चिल्ड्रन एकेडमी' का संचालन भी कर रहा है। दुर्घटनाओं में हाथ–पांव गंवा देने वालों के लिए देश के हर शहर में शिविर आयोजित कर उन्हें उनकी जरूरत और नाप के मुताबिक निःशुल्क कृत्रिम अंग दिए जा रहे हैं।

3 हजार लोग प्रतिदिन यहां भोजन–प्रसाद का लाभ ले रहे हैं। संस्थान ने वर्ष 2022 से आगामी पांच वर्ष के लिए नव सेवा संकल्प के रूप में विजन डाक्यूमेंट तैयार किया है। आपश्री के आशीर्वाद और सहयोग से निर्माणाधीन 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' भी 2026 तक पूर्ण होकर हजारों लोगों की सेवा में संलग्न हो जाएगा। विजन डॉक्यूमेंट के तहत जो लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं, उनमें निःशुल्क शल्य चिकित्सा में 15 प्रतिशत की वृद्धि, सहायक उपकरण वितरण में 25 प्रतिशत, कृत्रिम अंग निर्माण में 10 प्रतिशत, फिजियोथेरेपी चिकित्सा में 25 प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी।

इन 5 वर्षों में 10 सामूहिक विवाहों के माध्यम से 510 जोड़ों की गृहस्थी बसेगी, 250 छोटे एनजीओं को मदद, नारायण चिल्ड्रन एकेडमी सेकन्डरी लेवल में क्रमोन्नत व 1000 बच्चों को शिक्षा व्यवस्था, सम्पूर्ण भारत में 62 पी. एण्ड.ओ. वर्कशॉप केन्द्रों की स्थापना, 82 फिजियोथेरेपी व 82 रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ ही देश में 1200 नई शाखाओं की स्थापना का भी लक्ष्य है। संस्थान ने विदेशों में भी सेवा प्रकल्पों के विस्तार का निर्णय किया है। आगामी पांच वर्षों में 26 देशों में संस्थान के कार्यालय, 6 देशों में सेवा केन्द्र स्थापित किए जायेंगे। आपका हर कदम पर सहयोग, स्नेह व आशीष अपेक्षित है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

भारतीय संसद के उच्च सदन राज्यसभा में राष्ट्रपति द्वारा कतिपय सदस्यों का मनोनयन किया जाता है। ये सेवा, शिक्षा, कला, खेल आदि क्षेत्रों में जुड़े लोग होते हैं। इनकी नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति करते हैं। प्रधानमंत्री कार्यालय से कैलाश के पास राज्यसभा में मनोनयन किये जाने के संकेत आये थे। कैलाश के लिये संसद तथा राज्यसभा जैसी संस्था बहुत बड़ी चीज थी। उसकी कभी राजनीति में रूचि नहीं रही थी। प्रस्ताव के समक्ष कैलाश ने स्वयं को बहुत अदना पाया, उसके मन में यही सोच उत्पन्न हुई कि उसे कुछ आता–जाता तो है नहीं, इतने बड़े संस्थान में वह जाकर क्या करेगा।

अपने आपको प्रस्ताव के सर्वथा अयोग्य पा उसने मना कर दिया। नारायण सेवा के कार्यो की भी व्यस्तता थी कारण बनी। बाद में गहन मनन करने के बाद उसे अपनी भूल का अहसास हुआ मगर तक तक मनोनयन हो चुके थे। आज भी जब इस घटना का स्मरण होता है तो उसका मन पश्चाताप से भर उठता है।

2010 में हरिद्वार गया। वहां अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष स्वामी ज्ञानदास महाराज के सम्पर्क में आया। स्वामी ज्ञानदास उसे जानते थे। टी.वी. पर उसके कार्यक्रम देख, उसकी सेवाओं का परिचय प्राप्त कर वे बहुत प्रसन्न थे। महाराज ने उसे कहा– सेवा परमो धर्म है मगर धार्मिक कार्यो में भी कुछ पहल होनी चाहिये। कैलाश ने गायत्री शक्ति पीठ से जुड़े होने तथा रामायण पाठ, यज्ञादि कराने की गतिविधियों के बारे में जानकारी कैलाश ने महाराज को उदयपुर आने का निमन्त्रण दिया। जनवरी 2010 में महाराज ज्ञानदास अपने दल–बल सहित उदयपुर पधारे। कैलाश ने उनके ठहरने आदि की व्यवस्था अपने यहां ही की। महाराज ने उसके सेवा कार्यो का अत्यन्त निकट से अध्ययन किया और प्रशंसा करते हुए कहा कि दीन–दुखियों की सेवा करना ही सच्चा साधुत्व है। 3 माह बाद ही अप्रेल में हरिद्वार में कुंभ मेले का आयोजन था। महाराज ने उसे कुम्भ में आने का आमन्त्रण दिया तो कैलाश ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। कैलाश ने जब उन्हें बताया कि नारायण सेवा द्वारा कुंभ मेले में ऑपरेशन शिविरों का आयोजन किया जा रहा है तो वे आश्चर्य चकित रह गये।

अंश - 222

सर्दी में रोगों से बचाती कच्ची हल्दी

इन दिनों सर्दी–जुकाम, गले में खराश, खांसी जैसी समस्याएं आम है, कच्ची हल्दी का सेवन इनसे बचा सकता है। इसमें एंटीबैक्टीरियल, एंटी फंगल, एंटीऑक्सीडेंट जैसे तत्व ओर विटामिन सी व के, पोअेशियम, फाइबर, प्रोटीन, कैल्शियम, मैग्नीशियम, कॉपर, आयरन आदि होते है।

इन रोगों में फायदेमंद

- इंसुलिन का स्तर सुधारने में।
- यह संक्रमण से बचाव व चोट में सुधार करने का काम करती है।
- इसमें मौजूद करक्यूमिन यौगिक में एंटीकैंसर गुण प्रोस्टेट, पेट, अग्नाशय जैसे कैंसर का जोखिम कम करता है। डॉक्टरी सलाह लें।
- अल्जाइमर, पार्किसंस जैसे रोगों में भी करक्यूमिन राहत देता है।
- अस्थमा, ब्रॉकाइटिस में लाभकारी व पाचन एवं इम्युनिटी के लिए बेहतर है।

समस्याओं से राहत

- सर्दी–जुकाम, खांसी में रात को दूध में उबालकर पीएं।
- कच्ची उबालकर लहसुन व एक चम्मच घी के साथ लें, अपच नहीं होगी।
- खराश में राहत के लिए इसके पेस्ट में आधा चम्मच लहसुन का पेस्ट व एक चम्मच घी मिलाकर लें।

बवासीर और बड़ी आंत में परेशानी है तो चोकर वाला आटा खाएं

बदलती जीवनशैली से बवासीर और बड़ी आंत की परेशानी अधिक हो रही है। ऐसा होने पर मैदा – बैसन और दूसरी रिफाइन चीजों को खाने से बचें। इनसे परेशानी बढ़ती है। इसमें हमेशा मोटे अनाज और चोकर युक्त आटा खाएं। चोकर में फाइबर अधिक होता है। यह आंतों में चिपका हुआ मल और गंदगी साफ करता है। आंत साफ रहने से कब्ज व गैस नहीं बनती पेट फूलने की समस्या नहीं होती है। बवासीर और अमाशय के घावों में चोकर फायदेमंद होता है। यह खून में इम्यूनोग्लोब्यूलिन्स की मात्रा को बढ़ाता है जो इम्युनिटी बढ़ाने में मददगार है। यह टीबी जैसी खतरनाक बीमारी से लड़ने की भी ताकत रखता है। चोकर वाला आटा खाने से कोलेस्ट्रॉल कम होता है। अधिक वजनी एवं हार्ट के मरीजों के लिए भी चोकर युक्त आटा फायदेमंद है। फाइबर वजन भी नियन्त्रित रखता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

जब आदरणीय एन.एस. साहब ने फोन किया कैलाश जी कल 26 जनवरी है। आप आइये भोपाल स्टेडियम में आपको राज्य सरकार जिला स्तर का पुरस्कार देना चाहती है। वो हमें मालूम नहीं था और एप्लाई भी नहीं किया उन्होंने कहा कैलाश जी आप तो लिखते नहीं लेकिन हमें तो मालूम रखना था। जरूर साहब खुशी होती है पद, सम्मान अरे! मेरा शरीर भी नहीं रहेगा हड्डियाँ भी सब जल जायेगी। हड्डियाँ थोड़ी बहुत रह जायेगी बाकी तो सब जल जायेगी 206 हड्डिया थोड़ी बचती थोड़ी, बहुत बच जाती है। कोई कठोर दांत होता बच जाता है। कुछ जगा जो सबसे मजबूत हड्डी होती वो बच जाती है। तो लाला वो पाँच रुपये पच्चीस पैसे याद नहीं आ रहा लेकिन जमा हो गया सुख की सांस ली। पाँच रुपये पच्चीस पैसे कितने महत्त्वपूर्ण थे। एक रुपया भी महत्त्वपूर्ण होता है नीचे गिर जाता तो तीन बार ढूंढ़ते और ढूंढ़ के उसको माथे पर लगाते हैं। फिर बड़ी सावधानी के साथ जेब में रखते हैं। कहते है अब आगे मैं सजग रखूँगा, आगे में ध्यान रखूगां। अंग–अंग जगे, रोम–रोम जगे। याद आता है कभी मफत काका बहुत प्रेम रखते थे। लेकिन कभी एक बार ये नहीं कहा कि जल्दी मदद करो थोड़ा शांत हो जाया करो, थोड़ा रूक जाया करो, बीच में रूक जाया करो तटस्थ भाव थोड़ा रूको। समीक्षा करो कहाँ तक में बह गया। समय नदी की धार है बहना पड़ता है। समय ऐसा पर्वत है समय पर्वत को भी प्रभावित कर देता है। समय के चक्कर में सब चक्कर भी खाया करते है। दिसम्बर 1986 तक कई गाँवों में सेवा होती रही। मफत काका से भी मिलना होता रहा। ट्रकें भर–भर के आती रही। एक बार ट्रक में ज्वार आयी। कुछ लोगों ने दरवाजे पर खड़े होकर ट्रक अन्दर नहीं घुसने दी। कमला जी की एक–एक पल नारायण सेवा के लिये बीता है। कमला जी सम्पूर्ण नारायण मय हो गई।

ये कात्याफला, गोरियाहरा, दात्याफला ये सब वनवासी क्षेत्रों के नाम है। बच्चों को उसी तालाब से पानी पीते हुए देखा है जहाँ पर गाय भैंस भी पानी पीते है। ना कोई कुंआ है, ना ही कोई बावड़ी है, ना ही कोई नल है। बिजली भी नहीं है। बहुत जाना हुआ झोपड़ों–झोपड़ों में। कालीवास में, पई में, नाई में और बार–2 प्रभु कहता रहा बेटा वापस आना। एक बार अलसीगढ़ जाने मात्र से काम नहीं चलेगा। पंचायत ने सरपंच साहब ने कहा एक दिन विचार आया गौ सेवा करनी है।

गौ सेवा हमारे यहाँ खोल दो सरपंच साहब ने जमीन दे दी। लम्बी चौड़ी जमीन दे दी। उसकी नपती भी की गई। वो भी एक क्षण था, और आज भी एक क्षण है। कहते है पहले ध्यान आता था तो ऐसी गलती नहीं करता था। भैया अभी सही अब गलतियाँ मत कर। अगर गलती रूलाती है, तो राहे भी दिखाती है, मनुज गलती का पुतला है, वो अक्सर हो ही जाती है, जो कर ले ठीक गलती को उसे इंसान कहते है, किसी के काम जो आये, उसे इंसान कहते है। इंसानीय की प्रेक्टिकल परिभाषा गाँव में मफत काका बार–बार आ रहे है।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 349 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023